Digital Education Portal

निष्ठा प्रशिक्षण

डिजिटल शिक्षक प्रशिक्षण

प्रशिक्षण डायरी

शैक्षणिक खबरों से अपडेट रहने के लिए

हमें फॉलो सब्सक्राइब करें

https://t.me/digitaleducationportal

https://www.facebook.com/Digitaleducationportal

https://twitter.com/deelip_jaiswal

https://educationportal.org.in

https://bit.ly/36Djsw7

11

भाषा शिक्षण शास्त्र

प्रश्न:1 मैंने इस मॉड्यूल से क्या नया सीखा ?

- मूल्यांकन को अलग हिस्सा न मानना।
- कक्षा कक्ष में सहायक शिक्षण सामग्री का कैसे बेहतर उपयोग कर सकते।
- व्याकरण को अलग से पढ़ाने की आवश्यकता नहीं।
- भाषाओं के समेकन के साथ कौशलों का एकीकृत (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना)
- संवाद कहानी से प्रारम्भ करना जिससे बच्चों को विषय वस्तु से जोड़ा जा सके साथ ही दूसरा कार्य क्रियाकलाप करके दिखाना।

प्रश्न:2 इसको मैं अपनी शाला में कैसे लागू करूंगा ?

- टॉपिक को पढ़ाते समय, गतिविधि, खेल के माध्यम से साथ-साथ ही मूल्यांकन करूंगा।
- पहले जिस प्रकार उपयोग करता था उसमें इसके अनुसार उपयोग करूंगा।
- व्याकरण को पाठ पढ़ाते समय पठन के पश्चात ही सीखाऊंगा जिससे अलग से आवश्यकता नहीं होगी
- चारों कौशल का एकीकृत रूप उपयोग शिक्षण के दौरान करूंगा।
- हमेशा कक्षा के वातावरण को शिक्षण मय बनाने के लिए कहानी को चित्र के साथ उतार-चढ़ाव के साथ प्रस्तुत करूंगा और आवश्यक क्रियाकलाप भी करके दिखाऊंगा।

11 भाषा शिक्षण शास्त्र

भाषा शिक्षा के विभिन्न पक्षों को समझना जैसे- भाषा सीखने की प्रकृति सीखने में भाषा की भूमिकाएँ, संसाधन और कार्यनीति के रूप में बहुभाषिकता, शिक्षा नीति में भाषा, भारतीय संदर्भों में भाषा शिक्षण के उद्देश्य।

शिक्षकों को साक्षरता और भाषा सीखने के लिए एकीकृत कौशल दृष्टिकोण के साथ सतत आकलन से परिचित कराना।

अलग-अलग स्तरों के लिए सीखने के प्रतिफलों और सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं को बताने योग्य बनाना।

सामान्य सरोकारों की समझ बनाना, जैसे- विद्यार्थी, जेंडर संबंधि मुद्दों, विशेष आवश्यकताओं, समावेशी कक्षा, विद्यालय आधारित पूर्व व्यावसायिक शिक्षा और अन्य ऐसे संगत मुद्दों को जानना।

प्रक्रियाओं को समझना और निरंतर आकलन और सीखने के प्रतिफलों की रिपोर्टिंग के लिए कार्यनीतियों का उपयोग करना।

सामग्री की रूपरेखा

1. भाषा अधिगम और सीखने में भाषा की केन्द्रियता, भारतीय संदर्भों में भाषा, सीखने-सिखाने की स्थिति भाषा में शिक्षानीति, त्रि-भाषा सूत्र और बहुभाषिकता।
2. पहली, दूसरी और तीसरी भाषा के संदर्भ में भाषा शिक्षण।

3. भाषा शिक्षण के उद्देश्य और सीखने के प्रतिफलों तक पहुँचना।

4. भाषा कौशल शिक्षण- सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना, संदर्भ आधारित व्याकरण शिक्षण, शब्दावली और साहित्य मूल पाठ।

5. भाषा आकलन और इसकी प्रक्रियाएँ - सतत आकलन और आकलन के परिणामों की रिपोर्टिंग।

6. जेंडर विशेष आवश्यकताएँ, बहुभाषिकता, विविधता और सीखने-सिखाने के संदर्भों में समावेश जैसे- राष्ट्रीय और शैक्षिक मुद्दों को संबोधित करना।

भाषाओं का शिक्षा शास्त्र-परिचय -

भाषा सभी मनुष्यों और समाज का अनिवार्य हिस्सा है। प्रत्येक बच्चा अपनी मातृभाषा/ पहली भाषा को स्वाभाविक रूप से किसी गंभीर प्रयास के बिना सीख जाता है। जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं हम औपचारिक या अनौपचारिक स्थितियों से कई भाषाएँ सीखते हैं। हम भाषा सीखने या इसके अधिग्रहण में ऐसी प्रक्रियाएँ शामिल होती है, जिनमें बच्चे अस्पष्ट या स्पष्ट रूप से (बच्चे) कार्यनीतियाँ अपनाते है जैसे- अवलोकन, वर्गीकरण, अनुमान लगाना और उसका सत्यापन आदि। शिक्षा में भाषा की भूमिका को समझने के लिए हमें भाषा की प्रकृति जीवन और समाज के अन्य पक्षों के साथ इसके इंटरफेस, भाषा सीखने के बारे में मान्यताओं और भाषा सीखने के लिए विद्यार्थी के प्रयासों को समर्थन कैसे दे सकते हैं?

भारत जैसे देशों में कई भाषाएँ प्रचलित हैं और एक विशिष्ट भारतीय कक्षा में बहुभाषी लोग मिल सकते हैं। जब हमारे बच्चे विद्यालय में प्रवेश करते हैं तो वे अपनी एक भाषा अर्थात अपनी मातृभाषा सीखकर आते हैं।

वे अपनी उम्र और संज्ञानात्मक स्तर के अनुसार भाषा को अच्छी तरह जानते हैं। वे अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषा भी सीखते हैं जिसे अधिकांश भारतीय स्थितियों में दूसरी भाषा के रूप में माना जाता है। बच्चों में भाषा के प्रति इतनी जागरूकता है कि आवाज से शब्द कैसे बनते हैं और शब्द मिलकर एक साथ सार्थकवाक्य बनाते हैं इससे पता चलता है कि उनके पास एक आंतरिक व्याकरण है और वे इसका उपयोग करना जानते हैं।

बच्चे जो भी सीखकर कक्षा में आते हैं उसे अपनी कक्षा में हमें बेहतर बनाना होगा और उन्हे दूसरी/नई भाषा अंग्रेजी/दूसरी भाषा को सिखाने के लिए आगे बढ़ाना होगा।

भाषा सीखना : आयाम

NCF 2005 में कहा गया है कि भाषा शिक्षण मूलत: है सारे विषयों का शिक्षण है यानि सारे विषयों का

अध्यापक एक तरह से, दूसरी तरह से कहूँ सारे विषयों का अध्यापक एक तरह से भाषा का अध्यापक होता है और भाषा का अध्यापक मूलत: सभी विषयों का अध्यापक होता है। भारत बहुभाषी देश है। 6 से 52 भाषाएँ हमारे देश में कही गई हैं। एक महत्वपूर्ण बात यह है कि बहुत से विषयों की बात की जैसे विज्ञान शिक्षण, समाज विज्ञान शिक्षण, कला-शिक्षण, खेल शिक्षण बहुत सारी चीजों को कक्षा कक्ष तक लाना या भाषा से जोड़कर हमें कहीं न कहीं बताना है या भाषा पढ़ते हुए इस ओर जाना है तो जाहिर है हमें भाषा शिक्षण में इन सारे उद्देश्यों को पूरा करना पड़ेगा। प्रथम भाषा, द्वितिय भाषा, तृतीय भाषा के रूप में शिक्षण। इनमें अन्तर क्या है? प्रथम भाषा के रूप में किस भाषा को पढ़ते हैं तो क्या फर्क होगा और दूसरी भाषा के रूप में पढ़ते हैं तो और तीसरी भाषा के रूप में पढ़ते हैं तो और हमारे भारत की पूरी की पूरी वस्तु स्थिति देखी जाए तो कैसी है इन तरह से इस स्तरों पर

प्रथम भाषा के रूप में, द्वितीय भाषा के रूप में, तृतीय भाषा के रूप में हम पढ़ते हैं तो इसमें क्या फर्क आएगा हमारी भारतीय भाषाओं को ध्यान में रखते हुए अगर आप अंग्रेजी शिक्षण जब आप करते हैं तो अंग्रेजी हमारे भारत में एक तरह से द्वितिय भाषा की स्थिति है। बाकी भारतीय भाषाओं की कहीं पहली भाषा भी है कहीं दूसरी व तीसरी भी है। 1968 की नीति में हिंजिसकी बात कही गई है तो जिन कोर कम्पोनेंट को लेकर के हमारी पूरी शिक्षा की पृष्ठभूमि रची जाती है उन कोर कंपोनेंट के अलावा और भी उनमें तो बातें जरूर की गई है लेकिन ऐसे बहुत से बिन्दु है जिनको ओर जोर देकर आज के समय में पढ़ने-पढ़ाने की जरूरत है क्योंकि आज की सामाजिक जरूरत है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इनको सीखने के प्रतिफलों से भी जोड़कर रखा गया है।

इसमें एक बहुत महत्वपूर्ण बात यह है जिसपर हमें ध्यान देना चाहिए-कि आकलन के बिन्दु पर क्योंकि आंकलन को हम एक अलग गतिविधि के रूप में देखते हैं। तो आकलन एक अलग से गतिविधि न होकर पढ़ने-पढ़ाने का हिस्सा है। पढ़ने-पढ़ाने के साथ ही आकलन कैसा होगा या आंकलन का संबंध क्या बनता है? गतिविधियों में संवादात्मक स्थिति होगी आपस में संवाद करेंगे जिसमें उनको अधिक अवसर प्रदान किए जाएंगे। पहली बात तो हमने भाषा और सीखना जो बिन्दु है यानी सीखना होता कैसे है? सीखना किन परिस्थितियों में संभव है?

बच्चा कैसे सीखता है इसपर हमारा ध्यान ज्यादा होना चाहिए। बहुभाषी कक्षा का स्वरूप कैसा हो? बहुभाषी कक्षा होगी कैसे? प्रिंट रिच इनवायरमेंट हो होगा कैसे? प्रिंट कैसा होना चाहिए? विषयों के केन्द्र में भाषा यानि सभी विषयों से जोड़कर गतिविधियाँ भी सारे कौशलों को एक साथ समेकित रूप में।

भाषा शिक्षणशास्त्र

PAGE NO.: 6

भाषा अधिगम और सीखने में भाषा की केन्द्रियता भारतीय संदर्भों में भाषा सीखने-सिखाने की स्थिति, भाषा में शिक्षा नीति त्रिभाषा सूत्र और बहुभाषिकता

जेंडर, विशेष आवश्यकताएं बहुभाषिकता, विविधता और सीखने-सिखाने के संदर्भ में समावेशन जैसे राष्ट्रीय और शैक्षिक मुद्दों को संबोधित करना

पहली, दूसरी और तीसरी भाषा के संदर्भ में भाषा शिक्षण

Pedagogy of Languages.

भाषा शिक्षण के उद्देश्य

सीखने के प्रतिफलों की प्राप्ति

भाषा आकलन और इसकी प्रक्रियाएँ सतत आकलन और आकलन के परिणामों की रिपोर्टिंग

भाषा कौशल शिक्षण सुनना, बोलना, पढ़ना लिखना, संदर्भ आधारित व्याकरण शिक्षण शब्दावली और साहित्यिक मूलपाठ

भाषा सीखने-सिखाने की सामग्री

भारत में भाषा सीखने की स्थितियाँ

हमारा देश एक विविध देश है। हमारे यहाँ बहुतसारी भाषाएँ हैं। बच्चे अपने परिवेश से भाषा सीखते हैं। हमें भाषा की प्रकृति जीवन और समाज के अन्य पहलुओं के साथ इसके इंटरफेस, भाषा सीखने के बारे में मान्यताओं और भाषा सीखने के शिक्षार्थी के प्रयास में सहयोग कैसे कर सकते हैं पर एक समग्र परिप्रेक्ष्य विकसित करने की जरूरत है।

भाषा शिक्षक के रूप में यह समझने कि आवश्यकता है कि भाषा सीखने की स्थिति कैसी होती है और हमारी कक्षा के संदर्भों में भाषासीखने के लिए क्या स्थितियाँ हैं और इस बहुभाषी कक्षाओं को एक संसाधन और रणनीति के रूप में भी उपयोग करते हैं।

बहुभाषिकता -

1. बहुभाषिकता एक प्राकृतिक घटना है जो सकारात्मक रूप से संज्ञानात्मक लचीलेपन और शैक्षिक की उपलब्धि से संबंधित है।
2. द्विभाषिकता (संज्ञानात्मक और शैक्षिक उपलब्धि के साथ) के सकारात्मक संबंध को प्रभावी ढंग से प्रदर्शित किया है।
3. द्विभाषी बच्चों का न केवल कई अलग-अलग भाषाओं पर नियंत्रण होता है बल्कि शैक्षिक रूप से वे अधिक रचनात्मक और सामाजिक रूप से अधिक सहिष्णु भी होते हैं।

पहली, दूसरी, और तीसरी भाषा के रूप में भाषाएँ सीखना -

बच्चे अपनी पहली भाषा के साथ स्कूल आते हैं और फिर वे दूसरी और तीसरी भाषा सीखते हैं। पहली, दूसरी तीसरी भाषा सीखने की रणनीतियाँ भिन्न हो सकती हैं लेकिन उन्हें समृद्ध निवेश आधारित संचार वातावरण की आवश्यकता होती है।

समृद्ध निवेश आधारित संचार वातावरण

भाषाई निवेश आधारित समृद्ध संचार वातावरण का निर्माण प्रिंट और ऑडियो-विडियो सामग्री के माध्यम से किया जाता है जहां बच्चों की उम्र रुचि और स्तर जहां भाषा देखी जाती है भाषा पर ध्यान दिया जाता है और बच्चों द्वारा उपयोग की जाती है, उन्हे भाषा सीखने में मदद मिलती है और भाषा में दक्षता भी बढ़ती है।

सम्पूर्ण पाठ्यचर्या में भाषा अधिगम में भाषा की केन्द्रीयता को बढ़ावा देना

हर शिक्षक पहले भाषा शिक्षक है और फिर एक विषय शिक्षक इसलिए शिक्षार्थियों के भाषा कौशलों संपूर्ण पाठ्यचर्या में विकसित होते हैं। विज्ञान, पर्यावरण अध्ययन, सामाजिक विज्ञान गणित आदि सीखने के दौरान भी भाषा सीखना होता है।

"वह चिड़िया जो"

वह चिड़िया जो-
चोंच मारकर
दूध-भरे जुंडी के दाने
रुचि से, रस से खा लेती है
वह छोटी संतोषी चिड़िया
नीले पंखोंवाली मैं हूँ
मुझे अन्न से बहुत प्यार है।

वह चिड़िया जो
चोंच मारकर
चढ़ी नदी का दिल टटोलकर
जल का मोती ले जाती है
वह छोटी गरबीली चिड़िया
नीले पंखों वाली मैं हूँ
मुझे नदी से बहुत प्यार है।

वह चिड़िया जो
कंठ खोलकर
बूढ़े वनबाबा की खातिर
रस उँडेलकर गा लेती है
वह छोटी मुँह बोली चिड़िया
नीले पंखोंवाली मैं हूँ
मुझे विजन से बहुत प्यार है।

कविता के पढ़न में उचित लय उतार चढ़ाव हो आधी से अधिक कविता वहीं समझ में आजाती है। अलग - अलग विधाओं को पढ़ना कहानी, नाटक, कविता आदि की भी एक कौशल है भाषा का।

सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना कौशल की बात करते है ये कौशल अलग-२ नहीं है ये एकीकृत कौशल है।

भाषा से जुड़ाव के लिए कहानी एक सशक्त माध्यम है जिसमें बच्चे आनन्द के साथ एकाग्र होकर सुनते है और जिज्ञासा से प्रश्न भी करते है। इस माड्यूल में "मैं भी" एक कहानी के माध्यम से दिखाया गया। दूसरा क्रिया कलाप - इसमें बच्चों की प्रेक्टिकल के माध्यम से दिखाना जिसको देखने के पश्चात वे घर जाकर उसको करके देख सकें। इसमें एक क्रियाकलाप गतिविधि - क्या तैरेगा क्या डूबेगा के माध्यम से दिखाया गया।

बच्चों के बीच शब्दों की सूचि रखना और उसको अपनी भाषा में क्या कहते हैं शब्द ढूंढकर दिखाना बच्चे तुरंत भोजपुरी, निमाड़ी, मालवी जिस क्षेत्र से होगें वे ढूंढकर ले आएगें इसका मतलब यह हुआ कि उनको अपनी मातृभाषा से भी जोड़ रहे हैं। मातृभाषा के साथ किसी भी भाषा को पढ़ाएगें तो वे सक्रियता के साथ और आनंद के साथ सीखेगें। कविता ही नही किसी भी विधा के सहारे व्याकरण पढ़ा सकते है व्याकरण पढ़ाने का सर्वश्रेष्ठ तरीका यही है।

जब तक आप ज्ञान और अर्थ के सृजन की प्रक्रिया में अपने विद्यार्थियों को शामिल नहीं करेगें तब तक वह कविता उनसे जुड़ेगी नहीं और उनके समझ का हिस्सा भी नहीं बनेगी।

प्रिंट-रिच वातावरण कक्षा में बनाना

1. विद्यार्थियों को सुनकर समझकर बातों को जोड़ते हुए संदर्भ स्थापित करने में कुशल होना चाहिए। यहां सुनने से आशय मौखिक व्याख्यान करना ही नहीं बल्कि सुनकर समझकर और उससे अर्थ निकाल पाना भी है।

2. विद्यार्थियों को संदर्भों को आरेखित करके और पूर्व ज्ञान के साथ पाठ को जोड़कर अर्थ का निर्माण करने में सक्षम होना चाहिए। उन्हे आत्मविश्वास के साथ पाठ को पढ़ना आना चाहिए और समालोचनात्मक दृष्टिकोण को भी विकसित करना चाहिए।

3. भाषा की कक्षा में विद्यार्थी को अपनी कल्पना और रचनात्मकता विकसित करने के लिए उचित स्थान मिलना चाहिए। साहित्य, कहानियाँ, उपन्यास, कविता, नाटक और दार्शनिक सामग्री कल्पनाशीलता प्रदान करते है।

4. विद्यार्थियों को भाषा को समझने और उपयोग करने की क्षमता विकसित करने की आवश्यकता होगी है ताकि वे उसका प्रयोग ज्ञान से जुड़ी अलग - अलग प्रक्रियाओं को समझने में कर सके।

5. विद्यार्थियों को अपने संचार कौशल की सहायता से विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों में तार्किक विश्लेषणात्मक और रचनात्मक तरीके से चर्चा में शामिल होने में सक्षम होना चाहिए

6. विद्यार्थियों को अपने विचारों को अनायास और संगठित तरीके से व्यक्त करने के लिए आत्मविश्वास विकसित करना चाहिए।

7. कौशल को तभी सीख पाते हैं जब उनका उपयोग बार-बार करते हैं यानि हम करके सीखते हैं। इसका बहुत रोचक उदा० बच्चों का विडियो गेम खेलना सीख जाना।

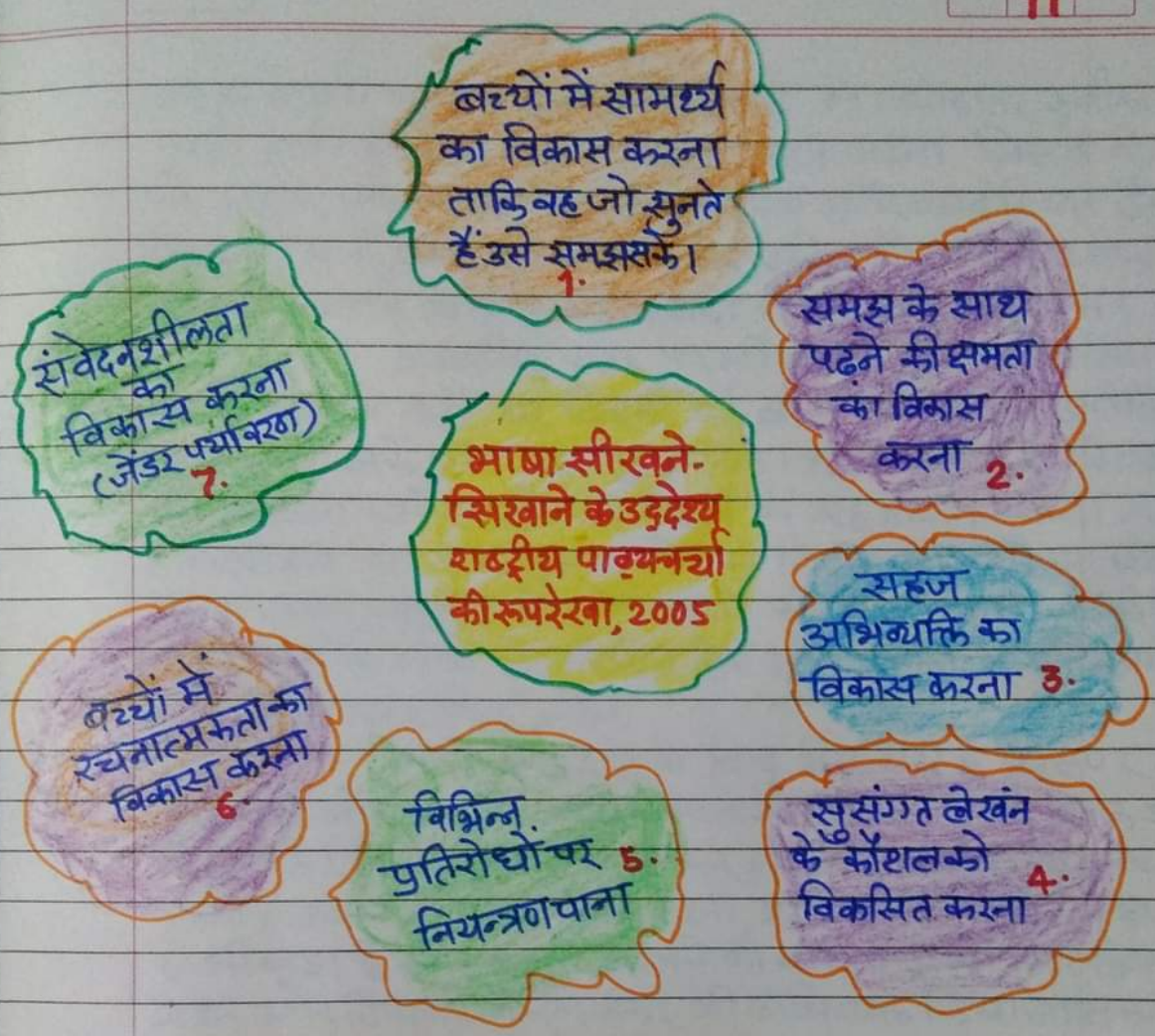

सीखने के प्रतिफल

बच्चे अपने साथ बहुत कुछ लेकर विद्यालय आते हैं- अपनी भाषा, अपने अनुभव और दुनिया को देखने का अपना नजरिया आदि। बच्चे घर परिवार एवं परिवेश से जिन अनुभवों को लेकर आते हैं वे बहुत समृद्ध होते हैं। उनकी इस भाषायी पूंजी का स्तेमाल भाषा सीखने सिखाने के लिए किया जाना चाहिए। बच्चे को ऐसा वातावरण मिलना जरूरी है जहाँ वे बिना रोकटोक के अपनी उत्सुकता के अनुसार अपने परिवेश की खोजबीन कर सकें। विद्यालय में आने पर बच्चे बेझिझक अभिव्यक्त करने में असमर्थ पाते हैं क्योंकि वे जिस भाषा में सहज रूप से अपनी राय, अनुभव, भावनाएँ

व्यक्त करना चाहते हैं वह विद्यालय में ज्यादातर स्वीकार नहीं होती है। वातावरण ऐसा प्रदान करना जिसमें वे अपने को सहज, कल्पनाशीलता, प्रभावशील और व्यवस्थित ढंग से भिन्न-भिन्न प्रकार का लेखन कर सके और अपनी भाषा को प्रभावी बनाने के लिए सही शब्दों का प्रयोग कर सके।

प्राथमिक स्तर पर भी बच्चों से यह अपेक्षा रहती है कि वे कही या लिखी गई बात पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकें और प्रश्न पूछ सके। भाषा सीखने-सिखाने की प्रक्रिया और माहौल के संदर्भ में यह ध्यान रखना जरूरी है कक्षावार या स्तरानुसार रोचक विषय सामग्री का चयन किया जाना चाहिए जिससे बच्चों को हिन्दी भाषा की विभिन्न शैलियों और रंगतों से परिचित होने और उनका प्रभावी प्रयोग करने के अवसर मिल सके।

भाषा संप्राप्ति के बिन्दु दिए गए हैं परस्पर उनमें जुड़ाव है और एक से अधिक भाषायी क्षमताओं की झलक उनमें मिलती है। किसी रचना को सुनकर/पढ़कर उस पर गहन चर्चा करना, अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करना, प्रश्न पूछना पढ़ने की क्षमता से भी जुड़ा है और सुनने बोलने की क्षमता से भी। प्रतिक्रिया प्रश्न और टिप्पणी को लिखकर भी अभिव्यक्त किया जा सकता है।

पाठ्यचर्या संबंधी अपेक्षाएँ -

- दूसरों की बातों को रुचि के साथ ध्यान से सुनना
- अपने अनुभव, कल्पना को बेझिझक और सहज ढंग से अभिव्यक्त करना।
- अलग-अलग संदर्भों में अपनी बात कहने की कोशिश करना
- स्तरानुसार कहानी कविता आदि को सुनने में रुचि लेना और मजे से सुनना सुनाना।
- देखी, सुनी और पढ़ी गई बातों को अपनी भाषा में कहना विचार करना और प्रतिक्रिया देना।
- सुनी और पढ़ी कहानियों और कविताओं को समझकर अपने अनुभवों से जोड़पाना।
- स्तरानुसार कहानी/कविता या अनुभव के स्तर पर किसी स्थिति का

निष्कर्ष या उपाय निकालना।

- चित्र और संदर्भ के आधार पर अनुमान लगाते हुए पढ़ना
- पढ़ने की प्रक्रिया को दैनिक जीवन की जरूरतों से जोड़ना
- सुनी और पढ़ी गई बातों को समझकर अपने शब्दों में कहना और लिखना।
- चित्रों को स्वयं की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाना
- अलग-अलग विषयों पर और अलग-अलग उद्देश्यों के लिए लिखना
- अपनी कल्पना से कहानी कविता आदि लिखना
- विषय सामग्री के माध्यम से संदर्भ के अनुसार नए शब्दों का अर्थ जानना
- मन पसंद विषय का चुनाव करके लिखना
- विभिन्न विराम चिन्हों का समझ के साथ प्रयोग करना।
- घर और विद्यालय की भाषा के बीच संबंध बनाना

नमूना

शिक्षकों को अपने भाषा शिक्षण के उद्देश्यों और उनके सीखने के चरण या कक्षा में सीखने के प्रतिफलों को समझने की जरूरत हैताकि उनकी कक्षा की प्रतिक्रियाओं के लिए प्रभावी ढंग से योजना बनाने के लिए अध्यापक से अपेक्षित [redacted] प्रतिक्रियाओं को समझने में मदद मिलती हैं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 द्वारा उल्लेखित उद्देश्यों में कौशलों और इसके अनुवर्त के रूप में विकसित पाठ्यक्रम को संदर्भित कर सकते हैं। सीखने के प्रतिफल इसके उद्देश्यों को योग्यता आधारित शिक्षण में बदल देते हैं।

पढ़ने से पहले

1. बच्चे गृहकार्य करने के बारे में समूह और जोड़े में अपनी पसंद नापसंद की चर्चा करते हैं और सब के साथ साझा करते हैं।
2. अध्यापक QR कोड या अन्य किसी स्रोत से ऑडियो क्लिप चला सकते हैं।

पढ़ते समय

1. उचित उच्चारण के साथ ऊँची आवाज में पढ़ सकते हैं।
2. कक्षा को जोड़े या समूहों में विभाजित करके बारी-बारी से पढ़ाया जा सकता है। बच्चों को समझने के साथ पाठ को डीकोड की सुविधा देता है।
3. प्रत्येक हिस्से को पढ़ने के बाद प्रश्न पूछ सकते हैं यह जानने के लिए कि वे पाठ समझ चुके है।

पढ़ने के बाद पढ़ने की समझ

1. समूहों या जोड़ों में बच्चों को पाठ्यपुस्तक पढ़ने के बाद मौखिक रूप से प्रश्नोत्तरी की जाती है फिर अलग-अलग लिखने को भी कह सकते है।
2. पाठ से आगे बढ़े हुए कुछ और प्रश्न भी पूछते हैं।

भाषा के साथ काम करना

1. यह पढ़ने और पाठ्य सामग्री की भाषा के पदों के आधार पर शब्दावली/व्याकरणिक गतिविधि है।
2. बच्चों को रिक्त स्थान भरने, खोजने को कहा जाता है।

सुनना और बोलना

1. बच्चों को कोई कहानी सुनने के लिए कह सकते हैं और कुछ प्रश्नोत्तर दे सकते हैं।
2. कहानी को फिर से सुनाए संक्षेप में सार बताएँ।
3. किसी अन्य भाषा/ बच्चों की मातृभाषा में कहानी सुनाए

बोलना

1. तीन या चार समूह में सबसे पहले विचार इकट्ठा करने के लिए विचार मंथन गतिविधि करते हैं।
2. उसके बाद गृहकार्य के बारे में विचार जानना कैसा महसूस करते हैं।

लिखना

1. बच्चे अब गृहकार्य में भावना लिखते हैं शिक्षक बताएंगे कि विचारों को कैसे इकट्ठा किया जाए। उन्हें कैसे लिखें पहले मसौदा लिखें और लेख को संपादित करें।

शैक्षणिक प्रक्रियाएँ

- सुनने की समझ विकसित करने के लिए एक संसाधन के रूप में।
- श्रव्य एवं दृश्य सामग्री आदि सुनना और साझा करना।
- व्यक्तिगत बातचीत में भाग लेना अपना एवं अन्य व्यक्तियों का परिचय

सीखने के प्रतिफल

- भूमिका निभाना, समूह चर्चा वाद-विवाद में भाग लेना।
- कविताएं, गीत, चुटकले, पहेलियां आदि सुनना न साझा करना मौखिक संदेश, टेलीफोन संचार का उत्तर देना।
- कक्षा विद्यालय की प्रार्थना सभा रेल्वे स्टेशन और सार्वजनिक स्थानों पर की गई घोषणाओं का और निर्देशों का जवाब देना।

रोलप्ले

अध्यापक माता-पिता के दृष्टिकोण से गृहकार्य देखने का अवसर प्रदान करता है। समूह बनाकर अभिनय करने की भूमिकाओं की फोटोकॉपी देना।

अतिरिक्त संसाधन

बच्चों को 5 मिनट याद करने और लिखने की अनुमति देते हैं बच्चे ऐसा कर लेते हैं तो फिर पाठ सुनने के लिए कहते हैं। लेखन मूल पाठ के करीब हो सकता है। कुछ बच्चे होमवर्क नहीं करते उन्हें ऊबाउ लगता है इसके बजाय खेल में अधिक ध्यान रहता क्योंकि उन्हें गृहकार्य पसंद नहीं।

पढना- पढ़ना एक संवादात्मक प्रक्रिया है जो पाठक और पाठ के बीच चलती है जिसके परिणाम स्वरूप पाठ को

समझा जाता है। पढ़ना केवल 'डिकोडिंग' नही है यह अर्थ बताने का प्रयास है। उस बात का निर्धारित करने के लिए ज्ञान कौशल और कार्य नीतियों का उपयोग करता है इसलिए इसे हम संवादात्मक और रचनात्मक प्रक्रिया कह सकते हैं।

लिखना -

लेखन हमें विचारों को व्यक्त करने और पाठकों तक अपने विचारों को पहुँचाने में मदद करता है बच्चों के लेखन कौशल को बेहतर बनाने के लिए हमें लेखन कौशल की प्रक्रिया को समझना होगा। लेखन कोई ऐसी चीज नहीं है जो पहली बार कागज पर लिखने से शुरू और इसी पर समाप्त होती है। यह एक प्रक्रिया है जिसमें नियोजन प्रारूपण, संशोधन, संपादन और पुनर्लेखन शामिल है।

लेखन कार्य गतिविधि को कित तरह किया जा सकता है - लेखन/विचार मंथन से पहले, लिखना, पुनरीक्षण और समीक्षा, संपादन, पुनर्लेखन।

शब्दावली

शब्दों का अधिग्रहण भाषा सीखने के क्षेत्र में एक प्रारम्भिक एवं आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। शब्दावली व्यापक और गहन हो सकती है। बच्चों को नए शब्दों की परिभाषा देना उनकी समझ में सुधार लाने के लिए पर्याप्त नहीं है।

स्वयं करने की गतिविधि
शब्द और इसके अन्य अर्थों पर चर्चा
शब्दों को संदर्भ में पढ़ने के कई अवसर
वाक्यांशों और वाक्यों में व्याकरण सम्मत शब्द लिखना।

भाषा शिक्षणशास्त्र

भाषा मूल्यांकन

- अधिगम प्रतिफल प्राप्त करना
  - अधिगम प्रतिफलों और उनके उद्देश्य समझकर उन्हें उनसे सम्बंधित हर एक घटक से जोड़ना
  - अधिगम प्रतिफलों तक पहुंचने के लिए कार्य-नियोजन करना।
- मूल्यांकन के साधन और तरीके
  - सतत मूल्यांकन
  - अधिगम और मूल्यांकन पर विभिन्न प्रकार के प्रश्न और मूल्यांकन से जुड़ी गतिविधियों का प्रभाव
  - अधिगम कार्य और मूल्यांकन कार्य के बीच का अंतर और इन दोनो के एकीकरण को समझना
- कौशल और दक्षताओं से संबंधित शिक्षण अधिगम
  - अर्थ के लिए पढ़ना एक कौशल जिसमें पढ़ना, अवलोकन करना और मुख्य शब्द पर ध्यान देना शामिल है
  - पढ़ने के कौशल अध्ययन कौशल मुख्य बिंदुओं को लिखना सारांश और सार लेखन

विभिन्न परिस्थितियों में शिक्षण अधिगम

- विविधता : कक्षा में बहुभाषिकता
  - एक रणनीति के रूप में बहुभाषावाद एक संसाधन के रूप मे और एक नीति के रूप मे बहुभाषावाद
  - शिक्षा नीति में भाषा को लेकर एक समालोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास- त्रि-भाषासूत्र और मातृभाषा आधारित बहुभाषावाद
  - भारतीय कक्षा में अंग्रेजी भाषा का स्थान और भूमिका और अंग्रेजी का प्रसार एक माध्यम के रूप में
- बच्चों की भाषा को पहचानना और उसका उपयोग उन्हें और भाषाएँ पढ़ाने सिखाने के लिए करना
- भाषा को प्रथम द्वितिय और तीसरी भाषा के रूप में पढ़ना, भाषा का शैक्षिक प्रासंगिक और सांस्कृतिक निहितार्थ क्या शैक्षिक रणनीतियां अलग-2 है
- प्रारम्भिक साक्षरता और भाषा विकास
  - भाषा से परिचित होना
    - भाषा समृद्ध वातावरण बनाना
      - भाषा सामग्री समृद्ध वातावरण बाल साहित्य पढ़ने का कक्षा में कोना कक्षा पुस्तकालय बनाना

सुनना और बोलना
सुनना क्या है? सुनने के कौशल पर आधारित विभिन्न दृष्टिकोण

उद्देश्य की पूर्ति करने के लिए बोलना - अभिवादन करके शुरू करना, सलाह देना, निवेदन करना आदि अभिनय करना बोलने से संबंधित गतिविधि प्रथम भाषा द्वितिय भाषा में करने के बीच अन्तर

लेखन - अधिगम के प्रारम्भिक वर्षों में लिखना सीखना

एक प्रक्रिया के रूप में लेखन प्रक्रिया आधारित लेखन दृष्टिकोण

लेखन के लिए प्रक्रिया आधारित दृष्टिकोण लेखक द्वारा हर चरण पर ध्यान दिया जाता है।

व्याकरण - अर्थ से संरचना की ओर जाना व्याकरणिक

विषयवस्तु का दैनिक जीवन में उपयोग

साहित्य का उपयोग भाषा सीखने के एक साधन के रूप में करना
विचारों का मंथन के लिए प्रोत्साहित करना

भाषा प्रवीणता बढ़ाने के लिए भाषा से जुड़े सभी कौशलो के समन्वय पर आधारित विधी और रणनीति

भाषा विकास के लिए रणनीति
कहानी सुनना एक शिक्षण नीति के रूप में बालगीत और कविताएँ

विषयगत शब्दावली

वह समझना कि लेखन और पठन कौशलों का विकास साथ-साथ होता है।

कहानी सुनाने की भाषा से जोड़ने वाली रणनीति के रूप में उपयोग करना, कहानी पढ़ना नही बल्कि कहानी सुनाना, सभी विद्यार्थियों का एक साथ कविता गाना गीत गाना, सभी विद्यार्थियों का एक साथ कहानी सुनना सभी का एकसाथ कहानी बुनना, कहानी लिखना और पढ़ना और पढ़ने के बाद की गतिविधियां

भाषा शिक्षण अधिगम के लिए सामग्री

सामग्री क्या? हो सकती है?

- पाठ्य पुस्तकें समाचारपत्रों पत्रिकाओं वास्तविक वस्तुओं संसाधन के रूप में शिक्षक
  - मैं शिक्षक कैसे शिक्षण सामग्री विकसित कर सकता हूँ।

शिक्षण सामग्री का उद्देश्य क्या है? शिक्षण सामग्री किस प्रकार भाव शिक्षा से जुड़ सकती है और बढ़ावा दे सकती है

भाषा शिक्षण के सिद्धान्त और शिक्षण सामग्री

भाषा शिक्षण के उद्देश्य

- बच्चों की सुनकर समझने की दक्षता का विकास
- समझ के साथ पढ़ने की क्षमता का विकास
- सहज अभिव्यक्ति विकसित करने के लिए
- लेखन कौशल में स्पष्टता विकसित करने के लिए
- विभिन्न साधनों को नियंत्रित करना
- बच्चों में रचनात्मकता विकसित करने के लिए
- संवेदनशीलता का विकास

मूल्य संस्कृति कला सौंदर्य और राष्ट्रीय एकीकरण के लिए भाषा शिक्षण का एक साधन के रूप में उपयोग

लेखन
शकेरा गुप्ता
बूढ़ा, मन्दसौर
9893361754